Research Inspiration
(Peer-reviewed, Open accessed and indexed)
Journal home page: www.researchinspiration.com
ISSN: 2455-443X, Vol. 08, Issue-II, March 2023

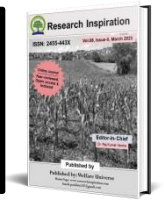

बन्दा सिंह बहादुर: मुगल राज्य से संघर्ष एवं सिख राज्य की स्थापना

(Banda Singh Bahadur: Struggle with Mughal State and establishment of Sikh State)

Savita[a,*],
[a] *Researcher (History), Kurukshetra University Kurushetra, Haryana, India.*

KEYWORDS

बंदा सिंह बहादुर, युद्ध, लड़ाई, अधिकार, क्षेत्र, सरहिंद, गुरु गोविंद सिंह, पंजाब

ABSTRACT

18वीं शताब्दी में मुगलों के खिलाफ तलवार उठाने वाले बंदा सिंह बहादुर ने गुरु गोविंद सिंह जी की आज्ञा लेकर नांदेड़ से पंजाब की ओर बढ़ा। जिसमें उन्होंने बहुत मुश्किलों का सामना किया लेकिन उन्होंने अपनी युद्ध कला व बुद्धिमता से इन मुश्किलों का सामना किया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य पतन की ओर बढ़ने लगा और उसकी कमजोर उत्तराधिकारी मुगल साम्राज्य को संभाल नहीं पाए और इसका फायदा उन शासकों को मिला जो मुगल साम्राज्य के शोषण से परेशान थे। इसमें बंदा सिंह बहादुर भी एक शासक के रूप में उभरे। बंदा सिंह बहादुर ने मुगलों के छोटे छोटे क्षेत्रों पर युद्ध कर अपना अधिकार किया- जिसमें सफलता मिलती रही और वह आगे बढ़ता चला गया। बंदा सिंह ब हादुर की सबसे बड़ी उपलब्धि सरहिंद का युद्ध था। बंदा सिंह बहादुर ने राजनीतिक प्रशासनिक सभी कार्य - अपनी शासन के दौरान किए।

लक्ष्मण देव से बन्दा सिंह बहादुर अपने समय का एक उत्तम दर्जे का सिख योद्धा था। योद्धा के तौर पर बन्दा बहादुर के बारे में गंढ़ा सिंह लिखते हैं कि युद्ध के मैदान में वह सबसे बहादुर व सबसे ज्यादा जरूरी वही होता था। कभी भी अपनी जान की फिक्र नहीं करता था।

डॉ. गोकुल चंद नारंग लिखते हैं, कि इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि जिसने सिखों के आचरण में इंकलाब लाया हो, और उन्हें एक नया जीवन दिया, वह गुरु गोबिंद सिंह है। लेकिन बन्दा सिंह बहादुर ने यह सिखाया कि किस प्रकार लड़ा जाता है, और किस प्रकार जीत प्राप्त की जाती है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है, कि गुरु गोबिंद सिंह ने बीज बोया और फसल बन्दा सिंह ने काटी।

बंदा सिंह बहादुर गुरु गोबिंद सिंह से आज्ञा लेकर पंजाब की ओर से बढ़ा। वह सबसे पहले वजीर खान को सजा देना चाहता था इसलिए उसने पंजाब तक पहुंचने के लिए हिंदू आबादी वाला रास्ता चुना। वह जयपुर की राजपूत रियासतों से गुजरता हुआ रोहतक पहुंचा, और दिल्ली के नजदीक पहुंचते ही उसने अपनी आगे बढ़ने की गति को धीमा कर करते हुए सोनीपत सीमा में प्रवेश किया। इसके पश्चात सहेरी खंडा नाम के गांव में अपने सैनिकों सहित ठहराव किया और यहीं पर अपनी युद्ध के लिए नीति.रणनीति तैयार की।[1]

पंजाब की ओर जाते समय बंदा सिंह बहादुर को काफी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ा। दिल्ली के क्षेत्र में पहुंचते ही उसकी रफ्तार धीमी हो गई और अब लोग यहां बंदा सिंह बहादुर को गुरु गोबिंद सिंह का प्रतिनिधि समझने लगे। बंदा सिंह

*** Corresponding author**
E-mail: savitakochar786@gmail.com (Savita). https://orcid.org/0009-0000-7897-0072
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v8n2.05
Received 08th Jan. 2023; Accepted 15th March 2023
Available online 30th March 2023
2455-443X /©2023 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

बहादुर दीन दुखियों की सहायता करने लग गया।[2]

अब बंदा सिंह बहादुर ने अपनी गतिविधियां शुरू कर दी थी। जिस गांव में भी वह ठहरा हुआ था, उस गांव के लोग चोर डाकुओं से बहुत परेशान थे। वहां के लोगों ने बंदा सिंह बहादुर के आगे हाथ जोड़ प्रार्थना करते हुए उन्हें डाकुओं से मुक्ति दिलाने की गुहार लगाई। इसके बाद बंदा सिंह बहादुर ने गांव में लोगों को परेशान करने वाले सारे डाकुओं को वहां से खदेड़ दिया। इसके बाद बंदा सिंह बहादुर गांव व आसपास के क्षेत्रों में काफी प्रसिद्ध हो गया और उनका चौतरफा नाम होने लग गया।[3]

सिहरी खंडा के बाद बंदा सिंह बहादुर सोनीपत पहुंचा और यहीं अपना अपना पहला आक्रमण किया। इस शहर में उस समय मुगलों की सैनिक चौकी थी। सिख सेना द्वारा सोनीपत पर आक्रमण करते ही उस चौकी का सूबेदार डर कर दिल्ली भाग गया, और सोनीपत पर सिखों का अधिकार हो गया। हालांकि बाद में सिख सैनिकों ने इस गांव की बागडौर का जिम्मा गांव की ही पंचायत को सौंप दिया और पंजाब की ओर प्रस्थान किया।[4]

सोनीपत पर पहला हमला करने के दौरान बंदा सिंह बहादुर ने भी यह नहीं सोचा था, कि सोनीपत में मुगल शासन की मजबूत चौकी है। यह दिल्ली के बिलकुल समीप है। शायद बंदा सिंह बहादुर का मुख्य उद्देश्य अपनी सेना का मनोबल बढ़ाना होगा। सोनीपत का फौजदार सिखों के सामने अधिक देर तक न टिक सका और वह वहां से दिल्ली भाग गया।

सोनीपत के बाद बंदा सिंह बहादुर मालवा क्षेत्र में स्थित समाना नाम के शहर की ओर चल दिया। लेकिन बीच रास्ते कैथल के नजदीक पहुंचने पर सूचना मिली कि भूना गांव के पास से मुगल सरकारी खजाना लेकर जा रहे हैं। धन की आवश्यकता के कारण बंदा सिंह बहादुर ने सैनिकों के साथ मुगलों पर आक्रमण कर उनसे सरकारी खजाना लूट लिया। मुगलों के काफी घोड़ों पर भी उनका अधिकार हो गया, और जो सरकारी खजाना मुगलों से लूटा गया था। वह बंदा बहादुर ने अपने सैनिकों में बराबर कर बांट दिया। इस तरह से बंदा सिंह बहादुर का कैथल पर भी अधिकार हो गया। सोनीपत की तरह कैथल का शासन प्रबंध भी वहां की पंचायत को सौंप दिया गया।[5]

सोनीपत व कैथल पर आक्रमण करने के बाद अब बंदा सिंह बहादुर समाना की ओर बढ़ा। इस क्षेत्र में अधिक संख्या में सैय्यद व मुगल जमींदार रहते थे, और इसी जगह पर जलालुद्दीन भी रहा करता था। जिसने गुरु तेग बहादुर को शहीद किया था। यहीं पर सासल बेग व बाशल बेग जिन्होंने गुरु गोबिंद के पुत्रों को शहीद किया था वे भी यहीं रहते थे। समाना मुगल शासन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। समाना में मजबूत इमारतें व हवेलियां बनी हुई थी। बंदा सिंह बहादुर व सिख सेना ने 26 नवंबर 1709 ई. को सुबह के समय समाना पर हमला बोल दिया था। इस युद्ध में यहां के लोगों ने भी उनका साथ दिया, क्योंकि वह भी मुगलों से नफरत करते थे, और उनकी गुलामी से आजादी चाहते थे। मुगल स्थानीय लोगों पर काफी अत्याचार करते थे, इसलिए उन्होंने युद्ध में सिख सेना का साथ देना ही लाजमी समझा। सुबह हमले के बाद और रात होने से पहले यहां की इमारतों ने खंडहरों का रूप लेना शुरू कर दिया था।[6]

समाना बंदा सिंह बहादुर व सिख सेना की पहली सफलता था। क्योंकि समाना मुगल राज्य का एक बड़ा राजनैतिक केंद्र माना जाता था, और यह सरहिंद प्रांत का एक महत्वपूर्ण परगना था। बंदा सिंह बहादुर ने सिख सेना के साथ मिलकर समाना पर पूर्ण रूप से अपना अधिकार कर लिया और समाना का सूबेदार भाई फतेह सिंह को नियुक्त किया गया। इसके बाद बंदा सिंह बहादुर सढौरा की

ओर आगे बढ़ा।[7]

इस लड़ाई में करीब 10 हजार लोगों के मरने का अंदाजा लगाया गया जिसमें मुगल व सैय्यद भी शामिल थे। वहीं जो बचे हुए लोग थे वह समाना छोड़ कर चले गए। सिख सेना को यहां से काफी सोना-चांदी से बने बड़ी मात्रा में जेवरात मिले।

इस विजय के बाद बंदा सिंह बहादुर ने भाई फतेह सिंह की बहादुरी से प्रभावित होकर उसे समाना का फौजदार नियुक्त किया और इतिहासकारों के मत अनुसार यहां से ही प्रथम सिख राज्य की स्थापना किए जाने की शुरुआत हुई।

समाना में कुछ दिन ठहरने के बाद ही बंदा सिंह बहादुर सरहिंद की ओर न बढ़कर बल्कि किरतपुर साहिब की ओर बढ़ा। रास्ते में घुंडाम ठसका मुस्तफाबाद और कपूरी समेत अन्य कई जगहों पर हमला किया।[9]

बंदा सिंह बहादुर समाना पर अधिकार करने के बाद साढौरा पर हमला करना चाहता था। उन्होंने सेना के साथ प्रस्थान किया। बीच रास्ते में जहां पर घुड़ाम था वहीं अहंकारी पठानों ने बंदा सिंह बहादुर को रोकने का असफल प्रयास किया। कई बार प्रयास करने के बाद भी जब सफलता हाथ नहीं लगी तो बीच मैदान छोड़कर भाग गए और घुड़ाम कस्बा लूटपाट कर उसे बर्बाद कर दिया गया। इस क्षेत्र को भी समाना के फौजदार भाई फतेह सिंह के अधीन क्षेत्र में शामिल कर दिया गया।[10]

इस बारे में गढ़ा सिंह लिखते है कि इस नगर को कूड़े में ढेर में बदल दिया गया, और भाई फतेह सिंह के क्षेत्र के साथ इस नगर को जोड़ दिया गया। घुड़ाम पर विजय प्राप्त करने के बाद बिना युद्ध किए ही उस पर भी सिख सेना ने अपना कब्जा कर लिया।[11]

ठसका नामक एक साधारण गांव था। इसके बाद शाहाबाद अंबाला जिले में स्थित एक कस्बा है, और सिख सैनिकों ने शाहबाद मुगल चौकी पर अपन कब्जा करके खालसे ने अपनी सैनिक चौकी स्थापित कर दी। इसके बाद बंदा सिंह बहादुर उत्तर की तरफ बढ़ता हुआ मुस्तफाबाद जा पहुंचा। यहां के फौजदार ने हमले को रोकने के लिए तोपों का इस्तेमाल किया। तोपों को देखकर खालसा दल में मौजूद लुटेरे वहां से भाग गए। लेकिन सिख सेना ने यहीं डटकर उनका सामना किया और यहां के फौजदार व सिपाही डर कर भाग गए। इस प्रकार से बंदा सिंह बहादुर ने साढौरा पहुंचने से पहले मुगलों की आखिरी सैनिक चौकी पर भी कब्जा कर लिया।[12]

बंदा सिंह बहादुर ने घुड़ाम पर 1709 ई. में अपना कब्जा कर लिया था। इसके बाद वह साढौरा की तरफ आगे बढ़ा। रास्ते में ठसका कपूरी सहित अन्य कई साधारण से गांव भी थे। उन पर भी बंदा बहादुर ने अपना अधिकार कर लिया था।[13]

मुस्तफाबाद पर अधिकार करने के बाद बंदा सिंह बहादुर साढौरा से चार मील दूर बराड़े की सड़क पर गांव दलौड़ में रातभर ठहरा और सुबह होते ही उसने कपूरी पर आक्रमण किया।

कदमउद्दीन की हवेली को आग लगा दी गई और यहां से काफी सोना चांदी सिखों के हाथ लगा। क्योंकि कदमउद्दीन का पिता औरंगजेब के समय में गुजरात का सूबेदार था जिसने काफी दौलत इकट्ठा की हुई थी।

बंदा सिंह बहादुर अब कपूरी से सढौरा की तरफ आगे बढ़ा। परमिंद्र सिंह उभा ने बताया है कि साढौरा प्राचीन समय से बौद्ध भिक्षुओं व हिंदू साधुओं का पवित्र स्थान है और साधुगड़ा के नाम से काफी प्रसिद्ध है। उस समय में साढौरा का सूबेदार उस्मान खाना था। उस्मान खान हिंदुओं पर काफी अत्याचार करता था। यहां तक भी हिंदुओं को अपने धार्मिक रीति-रिवाज अपनाने की भी आज्ञा नहीं थी और किसान वर्ग का भी अत्याचारों के

कारण काफी बुरा हाल था। अत्याचारों से पीड़ित इन लोगों ने बंदा सिंह बहादुर के पास पहुंचकर अत्याचारों से मुक्ति दिलवाने के लिए फरियाद की। शहर में पहुंचते ही सबसे पहले कुत्बुल अक्तान की मजार को आग लगा दी गई और गलियों व बाजारों में खूनी जंग शुरू हो गई। आसपास के अत्याचारों से दुखी किसानों ने भी सिखों का साथ दिया। सिख सेना से डरकर अमीर वजीर चौधरी व नवाब राव पीर बुद्ध शाह की हवेली में जाकर छुप गए। उस्मान खान ने भी यहां से भागने की कोशिश की पर सिख सेना ने उसे मौत के घाट उतार दिया और हवेली में छिपे हुए सभी लोगों को भी मौत के घाट उतार दिया गया। जिस कारण पीर बुद्ध शाह की हवेली का नाम कत्लगढ़ी पड़ गया। खानदानी अमीर वजीरों की हवेलियों में से भी धनए कीमती घोड़े व जेवरात भी सिख सेना अपने साथ ले गई।

15 नवंबर 1709 ई. को बंदा सिंह बहादुर ने साढौरे के किले में अपना दरबार लगाया और इस क्षेत्र के प्रबंध के लिए खालसा पंचायत की स्थापना की। 14

साढौरा पर कब्जा करने विजय प्राप्त करने के बाद पश्चात बंदा सिंह बहादुर मुगलिसगढ़ के किले की ओर बढ़ा। यह किला साढौरा के समीप पहाड़ियों में स्थित था। 16 नवंबर 1709 ई. को सिख सेना ने इस पर अधिकार कर लिया। 15

साढौरा के किले की मरम्मत कराकर सिख सेना को यहां पर तैनात किया गया। बंदा सिंह बहादुर लोहागढ़ के जंगलों में से एक चील का लंबा पेड़ काटकर लाया और किले में निशान साहिब बनाकर खड़ा कर दिया। यह निशान साहिब आज भी गुरुद्वारे में खड़ा है।

साढौरा के बाद बंदा सिंह बहादुर छतबनूड़ की ओर बढ़ा। छत व बनूड़ दो अलग-अलग गांव है और दोनों एक-दूसरे से बिलकुल नजदीक है। छत गांव के हिंदुओं ने बंदा सिंह बहादुर के पास आकर प्रार्थना की और कहा कि यहां के मुसलमान उनके ऊपर बहुत अत्याचार करते है। बंदा सिंह बहादुर ने तुरंत यहां सैनिक कार्यवाही कर उस पर भी अधिकार कर लिया।[16]

इसके बाद बनूड़ जो सूबा सरहिंद की एक महत्वपूर्ण चौकी थी। परंतु सिख सैनिकों का पता चलते ही यहां के सैनिकों ने कोई आक्रमण न करके ऐसे ही अपने हथियार सेना के सामने डाल दिए। यही समय है जब दुआब व मांझे के सिख बंदा सिंह बहादुर के साथ मिलने के लिए रोपड़ में मुगल सेना से जूझ रहे थे।[17]

अब बंदा सिंह बहादुर पर सरहिंद पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा। मंझा व दुआब के क्षेत्रों में आ रहे सिखों का इंतजार करने लगा, और दूसरी तरफ यह सिख सतलुज पार करके किरतपुर के समीप पहुंच गए थे। इधर इस बात कर पता चलते ही सरहिंद के सूबेदार वजीर खान ने मलेरकोटला के नवाब शेर मोहम्मद खां को आदेश दिया कि वह इन सिखों को आक्रमण कर बंदा सिंह बहादुर के पास जाने से रोके।[18]

मुहम्मद खान ने अपने ख्रिज खान व भतीजा नश्तर खान मुहम्मद के साथ मिलकर इन सिखों के विरूद्ध कार्यवाही शुरू कर दी। इस लड़ाई में मलेरकोटला के पठान रोपड़ और सरहिंद के कुछ सैनिक भी शामिल थे। लगातार तीन दिनों तक यह युद्ध चलता रहा और इस युद्ध में शेर मोहम्मद खान जख्मी हो गया और उसका भाई व भतीजा दोनों मारे गए। इसके बाद यह सिख बनूड़ आकर बंदा सिंह बहादुर से मिल गए।[19]

मांझे व दुआब के सिख आ जाने के बाद बंदा सिंह बहादुर सरहिंद की ओर बढ़ा और वह रास्ते में चप्पड़चिड़ी नाम के स्थान पर पहुंचा। चप्पड़चिड़ी खरड़ व लांडरा के बीच स्थित एक छोटा सा गांव

है।

बंदा सिंह बहादुर ने अपनी नीति से मुसलमान क्षेत्र जो सरहिंद के आसपास स्थित थे उन पर अधिकार कर लिया। बंदा सिंह बहादुर ने बांगर क्षेत्र से सोनीपत, कैथल, समाना, घुडाम, ठसका, थानेसर, शाहबाद कपूरी और साढौरा पर अधिकार किया और सरहिंद एक बड़ी लड़ाई लड़ने के लिए सैनिक व हथियारों में वृद्धि की।[20]

वजीरखान ने सरहिंद के बचाव के लिए अनेक प्रयत्न करने शुरू कर दिए। उसने अपने मित्र फौजदार व बड़े जमींदारों को सहायता करने के लिए बुलाया। सिखों के विरुद्ध इस्लामी जिहाद का ऐलान कर मुसलमानों को इकट्ठा किया।[21]

बंदा सिंह बहादुर और सिखों की तैयारी देखकर सरहिंद सूबेदार वजीर खान को डर लगने लगा और उसने संदेश भेजकर बंदा सिंह बहादुर को डराने की कोशिश की। परंतु बंदा सिंह बहादुर पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।[22]

बंदा सिंह बहादुर के पास सिख सेना में तीन तरह की सेना शामिल थी। पहले वर्ग में वे लोग थे जो कि सच्चे आज्ञाकारी दृढ़ सिख थे। जिसके अंदर धर्म की भावना जागृत थे और इनमें से कुछ दक्षिण से आए थे। इनमें से कुछ गुरु गोबिंद सिंह हुकमनामों के आदेश पर धर्म युद्ध के लिए आए हुए थे। दूसरे वर्ग में वे लोग शामिल थे जो कि वेतन के लिए कार्यरत थे और तीसरे वर्ग में वह लोग शामिल थे जो कि सिर्फ लूट व लालच के कारण बंदा सिंह बहादुर की सेना में शामिल हुए थे। बंदा सिंह के पास तोपखाना व हाथी नहीं थे। वह सिर्फ तीर कमान और तलवार ही सिखों के पास युद्ध के लिए थी।[23]

वजीर खान के पास 12 से 15 हजार की संख्या में सेना थी। हजारों की गिनती में वह लोग थे जो इस्लाम की रक्षा के लिए भड़का कर इक्ट्ठा किए गए थे। इनमें करीब 8 हजार सैनिक माजी थे और अपनी इच्छा के अनुसार ही युद्ध में शामिल होते थे।[24]

बंदा सिंह बहादुर ने सिख सेना पर आक्रमण करने के आदेश दे दिए थे। इसी दौरान सरहिंद का एक हिंदू सैनिक अधिकारी जो कि वजीर खान सुच्चा नंद का भतीजा था वह एक हजार सैनिक सहित बंदा सिंह बहादुर के पास आ गए, और कहा कि वह वजीर खान के अत्याचारों से परेशान होकर उससे बदला लेने के लिए खालसा सेना में शामिल होना चाहता हूं।[25]

12 मई 1710 ई. में चप्पड़चिड़ी के स्थान पर इस युद्ध की शुरुआत हुई। दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ। युद्ध में वजीर खान के अधिक संख्या में सैनिक हाथी और घोड़े तक मारे गए। बाज सिंह ने इस युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसने बहुत से मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, और वजीन खान को गिरफ्तार कर उसे रस्सी द्वारा बांधकर पूरे शहर में घुमाया गया। बाद में उसे एक पेड़ के साथ बांध दिया जहां पक्षियों ने उसे नोच खाया और वहीं उसकी मृत्यु हो गई।[26]

वजीर खान तथा बंदा सिंह बहादुर के बीच घमासान युद्ध हुआ। वजीर खान के काफी सैनिक मारे गए। कुछ सैनिक भाग निकले और काफी संख्या में वजीर खान के हाथी-घोड़े भी मारे गए। इसके अलावा करीब 5 हजार सैनिक भी मारे गए जहां इन सिखों का संस्कार किया गया। वहां पर आज शहीद गंज बना हुआ है।[27]

सरहिंद पर विजय प्राप्त करने के बाद सिख सेना ने सरहिंद सीमा में प्रवेश किया। सिख सेना ने सरहिंद में धन लूटा और लूटमार करने के बाद सारे परगनों पर अपना अधिकार कर लिया और यहां अपना सूबेदार नियुक्त कर दिया। तीन दिनों के युद्ध के पश्चात सिखों ने सरहिंद में प्रवेश किया।[28]

शाही अमीर महल व सुच्चा नंद की हवेली को जलाकर राख का ढेर कर दिया गया। अमीर वजीरां के घरों से लूटी गई धन दौलत के बारे में गड़ा सिंह लिखते है कि बंदा सिंह के हाथ आए लूट के माल की कीमत का अंदाजा करीब 2 करोड़ लगाया जिसमें वजीर खां न सुच्चा नंद दोनों की दौलत शामिल थी। सुच्चा नंद बहुत ही चालाक था और वह बचकर निकल गया।

सुच्चा नंद जिसे ने वजीर खान को गुरु गोबिंद सिंह के बच्चियों को शहीद करने के लिए उकसाया था उसे बंदा बना लिया गया था। उसका अपमान किया गया और उसे जूतियां मार मारकर उसका अंत कर दिया गया। उसे गिरफ्तार कर उसके नाक में मुंदरी डालकर उसमें रस्सी डाली गई और गलियों में घुमाया गया।[29]

बाज सिंह को सरहिंद का गवर्नर नियुक्त किया गया, और बाबा अली सिंह को उसके नयाब नियुक्त किया गया। भाई फतेह सिंह को समाने का सूबेदार तथा विनोद सिंह व राम सिंह दोनों को थानेसर का सूबेदार बनाया गया।[30]

सरहिंद का युद्ध सिख राज्य के लिए तथा मुगल शासन के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण लड़ाई थी। बंदा सिंह बहादुर ने सरहिंद पर अधिकार करने के पश्चात आसपास के क्षेत्रों में सैनिक कार्यवाही की। उसने सरहिंद में अमन, आयाम कायम करने के लिए बाग-ए-हाफजी में पहला दरबार लगाया और इसमें यह आदेश दिया कि सरहिंद मुगल साम्राज्य समाप्त कर खालसा राज की स्थापना कर दी गई।[31]

उपरोक्त दिए गए विवरणों से पता चलता है कि बंदा सिंह बहादुर गुरु गोबिंद सिंह की आज्ञा से पंजाब की ओर आगे बढ़ा जो कि काफी जरूरी थी। लेकिन उस समय बंदा सिंह बहादुर के लिए नांदेड से पंजाब तक रास्ता तय करना काफी मुश्किल था। उसने आने वाली हर मुश्किलों को अपनी युद्ध नीति का राजनीतिक सोच से इन कठिन रास्तों को तय किया।

बंदा सिंह बहादुर ने सबसे पहले रोहतक सोनीपत के क्षेत्रों में प्रवेश करके सहेरी-खंडा को अपनी युद्ध नीति का केंद्र बनाया। इसके बाद उसने सीधे लोगों से जुड़ना व उनकी सहायता करना शुरू कर दिया। लेकिन यह कार्य उसने अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए किया। आगे चलकर इससे उसे युद्ध कार्यों में सहायता मिली। इन्हीं लोगों ने बंदा सिंह बहादुर की सेना में शामिल होकर युद्ध में उसकी सहायता की।

बंदा सिंह बहादुर ने अपनी युद्ध नीति से सरहिंद के आसपास स्थित क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिया। जिसमें बांगर क्षेत्र से सोनीपत, कैथल, समाना, घुड़ाम, ठसका, थानेसर, शाहबाद कपूरी और साढौरा पर अधिकार किया। सरहिंद एक बड़ी लड़ाई लड़ने के लिए सैनिक व हथियारों में वृद्धि की।

संदर्भ सूची-

1. डॉ. हरचंद सरहिंदी, बाबा बंदा सिंह बहादुर पृष्ठ- 11।
2. हरचंद सरहिंदी बाबा बंदा सिंह बहादुर पृष्ठ 22, 23, 24।
3. गुरदेव सिंह दयोल, बंदा सिंह बहादुर पृष्ठ 15।
4. सुखदयाल सिंह, खालसा राज का बानी बंदा सिंह बहादुर पृष्ठ 22।
5. सुरिंद्र सिंह, डिस्कवरिंग बन्दा सिंह बहादुर, पृष्ठ 214।
6. सुरिंद्र सिंह, पूर्व उद्धरित बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 215।
7. सुखदयाल सिंह, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 23।
8. हरचंद सरहिंदी, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 27।
9. सुरिंद्र सिंह, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 215।
10. हरचंद सरहिंदी, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 28।
11. गुरदेव सिंह दयाल, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 22।
12. हरचंद सरहिंदी, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 28, 29।
13. सुखदयाल सिंह खालसा, राज का बानी बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 28।
14. हरचंद सरहिंदी, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 28, 29।
15. वही पृष्ठ 30।
16. सुखदयाल सिंह खालसा, राज का बानी, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 30।
17. सुरिंद्र सिंह, डिस्कवरिंग बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 219।
18. हरचंद सरहिंदी, वही पृष्ठ 31।
19. परमिंद्र सिंह ऊभा, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 136।
20. सुरिंद्र सिंह, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 220।

21. गड़ा सिंह, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 34।
22. हरचंद सरहिंदी, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 34।
23. गड़ा सिंह के अनुसार, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 32, 33।
24. सुखदयाल सिंह, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 118।
25. गड़ा सिंह, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 32।
26. सुरिंद्र सिंह, पूर्व उद्धरित, पृष्ठ 220, 221।
27. गड़ा सिंह, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 32।
28. बलवंत सिंह ढिल्लो, बंदा सिंह बहादुर, फारसी स्त्रोत, पृष्ठ 186।
29. हरचंद सरहिंदी, बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 43।
30. सुरिंद्र सिंह, डिस्कवरिंग बंदा सिंह बहादुर, पृष्ठ 222।
1. 31. सुखदयाल सिंह, बंदा सिंह बहादुर, ऐतिहासिक अध्ययन, पृष्ठ 130

****